RSS Programme

Quizzomania 2K19

Covid 19 Ration Distribution

Rastriya Sewa Yojan

Menstrual Hygiene Awareness Drive

Literacy Awareness Campaign

Save Water Campaign at Ahladpur

Health Camp Community Centre

Voter Awareness

ELECTION
326
FRIENDLY FOUR
E.V.M
NOTA
VOTE HERE

बुधवार , 23 अगस्त 2017
हिन्दुस्तान
23

बोरा इंस्टीट्यूट व यह एक सोच फाउंडेशन की ओर से 'माई लाइफ मेरे फैसले' विषय पर कार्यशाला का आयोजन

बाल विवाह की कुरीति के खात्मे के लिए युवाओं को आगे आना होगा

कार्यशाला

लखनऊ | हिन्दुस्तान संवाद

बोरा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट साइंस व यह एक सोच फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में सीतापुर रोड स्थित संस्थान के सभागार में मंगलवार को बाल विवाह पर आधारित 'माई लाइफ मेरे फैसले' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि बाल विवाह एक सामाजिक समस्या है। केवल कानून बनाने से यह कुरीति खत्म नहीं होने वाली है। इसका निदान सामाजिक जागरूकता से ही सम्भव है। युवा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अगर इस कुप्रथा को जड़ से खत्म करना है तो इसके लिए समाज को ही आगे आना होगा।

कार्यशाला का शुभारंभ बोरा इंस्टीट्यूट की महानिदेशक सलोनी बोरा व प्रधानाचार्या जया सिंह ने किया। महानिदेशक सलोनी बोरा ने कहा कि आश्चर्य की बात तो यह है कि आज के पढ़े लिखे समाज में भी यह प्रथा अपना स्थान बनाए हुए है। जो बच्चे अभी खुद को भी अच्छे से नहीं समझते, जिन्हें जिन्दगी की कड़वी सच्चाईयों का कोई ज्ञान नहीं, जिनकी उम्र अभी पढ़ने लिखने की होती है उन्हें बाल विवाह में बांधकर उनका जीवन बर्बाद कर दिया जाता है। उन्होंने कहा कि इस कुप्रथा को रोकने के लिए युवाओ को आगे आना चाहिए।

एमबीए मैनेजमेन्ट के अध्यक्ष अनुराग श्रीवास्तव ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम अपनी शिक्षा तभी पूरी कर सकते है जब हम अपने आस पास की समाजिक कुरीतियों का दूर कर पाएं। यह एक सोच फॉउण्डेशन की कार्यक्रम समन्वयक स्वाति सिंह ने कहा कि माई लाइफ मेरे फैसले कार्यक्रम युवाओं को एक ऐसा मंच प्रदान कर रहा है जहां वो एक साथ मिलकर सामाजिक कुरीतियो जैसे बाल विवाह, पितृसत्ता, लिंग आधारित भेदभाव और हिंसा के बारे मे सोच सके और उसके खिलाफ प्रतिभाग कर सके। कार्यशाला में इंस्टिट्यूट के देवेश श्रीवास्तव, फाउंडेशन शारिक अहमद खान व मधुलिका मिश्रा समेत इंस्टिट्यूट के छात्र छात्राएं मौजूद रहे।

2030 तक 95 करोड़ हो जाएगी बाल विवाह दर की संख्या

कार्यशाला में यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में 47 फीसदी बालिकाओं की शादी 18 वर्ष से कम उम्र में कर दी जाती है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि 22 फीसदी बालिकाएं 18 वर्ष से पहले ही मां बन जाती हैं। बाल-विवाह के सर्वाधिक मामलों वाले राज्य क्रमशः उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश और गुजरात हैं। लड़कियों की तुलना में लड़के बाल विवाह के ज्यादा शिकार हो रहे हैं। बाल विवाह के भुक्तभोगियों में 57 फीसदी पुरुष और 43 फीसदी महिलाएं हैं। संयुक्त राष्ट्र ने भी माना है कि आज पूरी दुनिया में लगाम नहीं कसी गई तो मौजूदा 70 करोड़ बाल विवाह के मामलों की संख्या 2030 तक बढ़कर 95 करोड़ हो जाएगी।

जनसंदेश टाइम्स
लखनऊ, बुधवार 23 अगस्त 2017

युवाओं ने कहा, रोकेंगे बाल विवाह

बोरा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट साइंस व यह एक सोच फाउण्डेशन की ओर से आयोजित हुआ कार्यक्रम

यह एक सोच फाउण्डेशन की ओर से आयोजित कार्यक्रम में भाग लेती छात्राएं

लखनऊ। बोरा इन्सटीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट साइन्स तथा यह एक सोच फाउण्डेशन की ओर से एक दिवसीय कार्यशाला का आयेाजन मंगलवार को किया गया । कार्यशाला का मुख्य उददेश्य यह एक सोच फाउण्डेशन के कार्यो की जानकारी तथा संस्था द्वारा लखनऊ शहर में चलाये जा रहे माई लाईफ मेरे फैसले कार्यक्रम का उन्मुखीकरण करना था। कार्यक्रम का आरम्भ बोरा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट साइन्स की महानिदेशक सलोनी बोरा के द्वारा हुआ। उन्होंने युवाओं को सम्बोधित करते हुये कहा कि आज के समय में भी हम बाल विवाह का मुददा देखते है और हम युवाओं की जिम्मेदारी है कि हम इसे रोके, इसके लिये आवाज उठायें। इसी प्रकार प्रधानाचार्या जया सिंह ने कहा कि हम हमारी समाजिक जिम्मेदारियों के विषय में चर्चा नहीं करते हैं और हम अधिकारों के लिये बात करते हैं। जब हम संमाजिक जिम्मेदारियों को समझेंगे तभी हम अपने अधिकारों को समझ पायेंगे। इसी प्रकार एमबीए मैनेजमेन्ट के अध्यक्ष अनुराग ने युवाओं को सम्बोधित करते हुये कहा कि हम अपनी शिक्षा तभी पूरी कर सकते हैं जब हम अपने आस पास की समाजिक कुरीतियों को दूर करें।

वहीं यह एक सोच फॉउण्डेशन की कार्यक्रम समन्वयक स्वाति ने संस्था के विषय में बताते हुये कहा कि फाउण्डेशन वर्ष 2012 से युवाओं के व्यक्तित्व विकास, क्षमतावर्धन पर काम कर रही है।

संस्था की दूरदर्शिता और प्रयास है कि कैसे एक युवा को इतना सशक्त किया जाए कि वो अपनी प्रतिभाओं को पहचान कर सुरक्षित और सम्मानपूर्ण जीवन जी सके। माई लाइफ मेरें फैसले पोग्राम, इसी क्रम मे युवाओं को एक ऐसा मंच प्रदान कर रहा है जहां वो एक साथ मिलकर सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह, पित्रसत्ता, लिंग आधारित भेदभाव और हिंसा के बारे मे सोच सके उसके खिलाफ प्रतिभाग कर सकें और एक साथ सबकी राय का सम्मान करते हुए चर्चा कर सकें। प्रोग्राम का प्रयास है कि युवा न केवल समाज में व्याप्त बुराइयो को सोचे और इस पर चर्चा करें बल्कि उसके समाधान को खोजे और उस पर एक साथ आगे बढ़ें। *कासं.*